GAP भाषा

A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH

(ISSN – 2582-8770)

Globally peer-reviewed and open access journal.

डॉ. अम्बेडकर का नवयान बुद्धिजम

डो. दिलीप चारण

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
तत्वज्ञान विभाग,
गुजरात युनिवर्सिटी,
अहमदाबाद-३८०००९

डॉ. अम्बेडकर स्वयम् चिंतनात्मक प्रतिभा थे । हम उन्हें एक जागृत बौद्धिक के रूप में समझ सकते हैं । प्रणालीगत या स्थापित व्यवहार के वे केवल विवेचक ही नहीं थे मगर स्थापित सामाजिक व्यवहार की विश्वसनीयता के विक्षेपक थे । उन्होंने स्पष्ट रुप से यह अनुभव किया कि उनके विद्रोही सुर को सत्ता के द्वारा निष्प्रभावी बनाया जाता है । सच्चे अर्थ में बौद्धिक वह है जो किसी भी प्रकार की एकाधिकारिता पर स्पष्ट रुप से प्रश्न करे । जो स्थापित है उसे बेनकाब करे और उसके लिए वह प्रतिबद्ध हो वही सच्चे अर्थ में बौद्धिक है । वे व्यावसायिक बौद्धिक नहीं थे जैसा कि आज समाज में हमें प्रत्यक्ष रूप से प्रतीत होता है । डॉ. अम्बेडकर ने सत्ता के समक्ष सत्य को समर्पित नहीं किया । अपनी निजी पगडंडी प्रस्तुत की और उसे सशक्त भी किया । यहाँ उनके इस कर्तव्य को ग्रामसी के शब्दों में समझा जा सकता है । सभी मनुष्य बौद्धिक हैं मगर बौद्धिकता का कार्य समाज में कुछ 'चोजन फ्यु' ही कर सकते हैं । ऐसे बौद्धिक, ही स्पष्ट रूप से सत्ता का नियमन एवम् निरसन भी कर सकते हैं । ऐसे बौद्धिक मानव समुदाय के मन को बदलनें का साहस करते हैं । जुलीयन बेन्डा (Julien Benda) के अनुसार बौद्धिक भले ही नाजुक हो मगर वे प्रतिभासंपन्न होते ही हैं । नैतिकता का वरण करनेवाले वे ऐसे महारथी हैं जो समग्र मानव जाति की अंतरात्मा का निर्माण करते हैं । क्योंकि उनकी निस्बत समग्र विश्व के कल्याण की होती है । डॉ. अम्बेडकर 'तात्विक विरक्त' नहीं थे मगर न्याय और सत्य की खोज ही उनका अभियान था । इसी के कारण उन्होंने वर्ण आधारित समाज जो शोषित समाजव्यवस्था है उसका विरोध किया । जो समाजव्यवस्था सामूहिक संवेगों से चलती है तो वह मानव के सत्य को शापित करती है । डॉ.अम्बेडकर ऐसे प्रतिबद्ध बौद्धिक थे जिनमें साहस, हिम्मत और संवेदना जागृत थी । इस बौद्धिक जागृति के कारण उन्होंने बौद्धधर्म का व्यक्तिगत एवम् सामाजिक रूप में वरण किया । उनका यह मानना था की भारत में नई लोकशाही व्यवस्था वर्णव्यवस्था को नेस्तनाबूद नहीं कर सकती । किसी राजकीय नीति के द्वारा इसे जीवित रखा जा सकता है । उसी के लिए इष्ट यह है कि बौद्ध धम्म का वरण किया जाए । बौद्धधर्म ही एक ऐसा धर्म है जो सामाजिक समानता का स्वीकार करता है । बुद्ध आम्रपाली के घर जितनी सहजता से भोजन कर सकते हैं उतनी ही सहजता से वे किसी ब्राह्मण राजवी या व्यापारी के घर भी भोजन कर सकते हैं क्योंकि बुद्ध का धम्म समानतावादी है और यह समानता डॉ. अम्बेडकर के अनुसार हिंसा से नहीं, न्याय से प्राप्त होती है । गांधीजी को उन्होंने लोकशाही के वस्त्र परिधान करनेवाले रुढिवादी समर्थक के रूप में निरुपित किया है ।

To leave inequality between class and class, between sex and sex, which is the soul of society, untouched, and to go on passing legislation relating to economic problems is to make a force of our constitution and to build a palace on a dung heap". (Khilnani, 2016 : 481)

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार धर्म की उत्क्रांति :

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार 'धर्म बहुआयामी शब्द है । धर्म को किसी एक दायरे में समझना पर्याप्त नहीं है । डॉ. अम्बेडकर धर्म को सांस्कृतिक एवम् मानव इतिहास की उत्क्रांत होती हुई संकल्पना के रूप में देखते हैं । प्रारंभ में जो प्राकृतिक घटनाएँ आदिमानव की समझ से परे थीं वैसी घटनाओं को धर्म का नाम दिया गया । उस समय धर्म को विस्मय के रूप में देखा गया क्योंकि इसमें प्रकृति और उसके रहस्यमय क्रिया-कलाप मुख्य तौर पर केन्द्र में थे । इस विस्मय के बाद की उत्क्रांत स्थिति में धर्म को मान्यताओं, रुढ़ियों, उत्सवों, प्रार्थनाओं और बलिदान के रूप में देखा गया । शक्ति के स्रोत को धर्म का केन्द्रबिंदु माना गया । धर्म की इस अवस्था में धर्म विस्मृत नही रहा और इस शक्ति के स्रोत को ईश्वर या सृजनहार के रूप में स्वीकार किया गया । धर्म की तृतीय उत्क्रांत अवस्था में 'ईश्वर' की संकल्पना का उद्भव हुआ । ऐसे ईश्वर को जगत और मानव के सर्जक या सृजनहार के रूप में देखा गया जिसमें यह मान्यता भी समाविष्ट है कि मानव मूलत: आत्मरूप है और यह आत्मतत्त्व शाश्वत है, सनातन है । मनुष्य के जागतिक कर्मों का हिसाब ईश्वर माँगता है ।' डॉ. अम्बेडकर के अनुसार धर्म की इस उत्क्रांत अवस्था में निम्नलिखित मान्यताएँ निहित थी : (Rodrigues, 2002 : 58)

१. ईश्वर में आस्था ।

२. आत्मा में आस्था ।

३. ईश्वर की आराधना ।

४. ईश्वर अव्यवस्थित या अपूर्ण आत्मा का उपचार करता है ।

५. ईश्वर को प्रार्थना, आराधना, विधि-विधान और उत्सव द्वारा संतुष्ट किया जाता है ।

धर्म और धम्म के बीच भिन्नता :

डॉ. अम्बेडकर स्पष्ट रुप से मानते हैं की धर्म और धम्म में अंतर है । धर्म और धम्म के बीच की भिन्नता को उन्होंने समझाया है । उनके मतानुसार धर्म और धम्म एक नहीं है क्योंकि धर्म वैयक्तिक है, निजी है, जबकि धम्म सामाजिक है । धम्म सामाजिक होने के कारण मूलभूत है । धम्म कभी भी समाज से विरक्त नहीं हो सकता । वह समाज एवम् संस्कृति का हार्द है । 'धम्म' का अर्थ है - "जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव-मानव के बीच न्यायी संबंध ।" इसका अर्थ यही है कि अम्बेडकर के अनुसार धम्म कभी समाज से पर नहीं है । समूह जीवन में धम्म की आवश्यकता और अपरिहार्यता है । एक अकेले व्यक्ति को धम्म की तार्किक रुप से कोई आवश्यकता नहीं है, मगर जब दो व्यक्ति परस्पर जीवंत संबंध में प्रवृत्त होते हैं, जुड़ते हैं, उस स्थान पर धम्म अनिवार्य है । इसलिए अम्बेडकर के अनुसार धम्म से मानव अपने को पृथक नहीं कर सकता । अत: समाज धर्म से असम्पृक्त नहीं रह सकता । किसी भी समाज को धम्म की पसंदगी अवश्यमेव करनी पड़ती है ।" इस पसंदगी के तीन विकल्प डॉ.अम्बेडकर ने प्रस्तुत किये हैं :

१. प्रथम विकल्प है - समाज धम्म की अवहेलना करे लेकिन यह विकल्प इच्छनीय नहीं है क्योंकि धम्म के बिना समाज अराजकता के पथ पर चलता है ।

२. द्वितीय विकल्प में समाज धम्म को शासन के साधन के रुप में स्वीकार कर सकता है । यह विकल्प भी डॉ. अम्बेडकर के अनुसार उचित नहीं है क्योंकि इसमें शासन एक प्रकार की आपखूदशाही में परिणत होता है । चाहे कानून के द्वारा, चाहे तंत्र के द्वारा उसकी पसंदगी अनिवार्य रुप से आपखूदशाही में परिणत होती है । इसलिए धम्म को यदि शासन के साधन के रुप में देखा जाए तो वह धम्म नहीं है ।

३. समाज 'धम्म' और 'शासन' दोनों को स्वीकार करें जिसमें 'धम्म' या सदाचार विरुद्ध आचरण करने वालों को शासन के द्वारा नियंत्रित किया जाए ।

उपर्युक्त तीन पसंदगियों में प्रथम हमें अराजकता की ओर ले जाती है । दूसरी पसंदगी अनिवार्यत: आपखूदशाही में परिणत होती है । इन दोनों पसंदगियों में मानव 'स्वतंत्रता' का कोई महत्त्व नहीं रहता । एक तृतीय विकल्प ही ऐसा है जिसमें मानव स्वातंत्र्य पनप सकता है । अत: डॉ. अम्बेडकर का यह स्पष्ट मत है कि जो कोई मानव स्वातंत्र्य के पक्षघर है उन्हें धम्म के तृतीय विकल्प का स्वीकार करना चाहिए ।

यहाँ प्रश्न उठता है कि 'धम्म' क्या है । बुद्ध का स्पष्ट उत्तर है कि 'धम्म' प्रज्ञा और करुणा है । प्रज्ञा का अर्थ है 'समझ' और करुणा का अर्थ है 'प्रेम' । इस प्रकार बुद्ध के अनुसार 'धम्म' के दो प्रमुख तत्त्व हैं – प्रज्ञा और करुणा । ऐसे 'धम्म' में वहम, अंधविश्वास, असमानता का कोई स्थान नहीं है । डॉ. अम्बेडकर बौद्धधर्म के प्रेम और करुणामय स्वरुप से आकर्षित होते हैं । उनका मानना है कि प्रेम और करुणा के बिना समाज न तो 'जीवंत रहता है, न विकास करता है, न तो उत्क्रांत होता है ।' इसी अर्थ में 'धम्म' और 'धर्म' दोनों भिन्न हैं । 'धम्म' की यह संकल्पना केवल पुरातन नहीं है मगर वह आज भी प्रस्तुत है । प्रज्ञा और करुणा के संमिश्रण से 'धम्म' उत्पन्न होता है, यह विचार स्वयम् में एक नूतन विचार है जो आज की वर्तमान परिस्थिति में भी प्रस्तुत है । (Rodrigues, 2002 : 59)

बौद्ध धर्म की धरोहर :

बौद्ध धर्म जीवन की ठोस हकीकतों या तथ्यों के साथ जुड़ा हुआ है । इसलिए महात्मा बुद्ध प्रतिपादित 'धम्म' के अर्थ में ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, नर्क का चिंतन नहीं है । बुद्ध का 'धम्म' जीवन के साथ अनुस्यूत है । इसलिए डॉ. अम्बेडकर यथार्थ कहते हैं कि सच्चा धर्म शास्त्रों में नहीं है किन्तु मानव हृदय में है । धर्म को परलोक से नही बल्कि जीवन के व्यवहारों के साथ संबंध है । सृष्टि के उद्गम और अंत की स्थिति मानव का कोई भी हित नहीं कर सकती । मानव के दु:ख स्वार्थ के संघर्ष पर आधारित हैं और यह संघर्ष का निवारण अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण है ।

स्वार्थ, संपत्ति और सत्ता समाज में दु:ख का कारण है । इन कारणों को समझने के लिए किसी भी अच्छे समाज के लिए यह अति आवश्यक है कि मानव जीवन के दु:खों के मूल तक जाया जाए । मानवअस्तित्व की सामाजिक असमानता ही संघर्ष का प्रधान कारण है । इसलिए सच्चे धम्म के स्वीकार का अर्थ है - मानव अस्तित्व की समानता का स्वीकार करना । यह समानता व्यावहारिक रुप में होनी चाहिए न कि केवल वाणी व्यवहार के स्तर पर । धम्म की वास्तविक भूमि पर 'सभी लोगों' के साथ शुद्ध मैत्री समाविष्ट है । ऐसी मैत्री सामाजिक दु:खो से मुक्ति का एक सार्वत्रिक उपाय है । मैत्री की अपेक्षा चारित्र्य से है अर्थात् मनुष्य का चारित्र्य ही ऐसा हो जिससे शत्रुता का नाश हो जाए ।

दुनीया में कुछ भी शाश्वत नहीं है । इस दृष्टि से जीवन और जगत के परीक्षण की आवश्यकता है । परीवर्तनशीलता के दृष्टिकोण से देखें तो जगत में कुछ भी अंतिम नहीं है । सब कुछ कार्य-कारण के नियम से बँधा हुआ है । अर्थात कुछ भी सनातन नहीं है, मात्र परिवर्तन ही

GAP भाषा

A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH

(ISSN – 2582-8770)

Globally peer-reviewed and open access journal.

शाश्वत है । – 'everything is subject to change' युद्ध भी असत्य है जहाँ तक वह सत्य और न्याय के पक्ष में नहीं है । विजेता की जिम्मेवारी पराजित के प्रति भी है । बौद्ध धर्म का यही दृष्टिबिंदु - उनकी वैचारिक धरोहर प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन है । अतः महात्मा बुद्ध का दर्शन मानवजाति के लिए गहन होते हुए भी आवश्यक है ।

वर्ग संघर्ष से मुक्ति का पथ बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग में निहित है । संपत्ति का मालिकी भाव ही सर्वप्रकार के संघर्ष की जड़ है । ऐसे मालिकी भाव से मुक्त होने के लिए बुद्ध ने भिक्षुओं के लिए आठ चीजों का प्रावधान किया है । (Ambedkar, 1997 : 419)

(१) त्रिचीवर - तीन जोडी कपड़े । (Three robes or pieces of cloth for daily wear)

(२) कटि बंधणी – कमरपट्टा । (a gridle for the lions)

(३) भिक्षापात्र । (an alms - bowl)

(४) वाति । (a razor)

(५) सुई – धागा

(६) अलक्षाधक – पानी साफ करने का साधन । (a water - strainer)

बुद्ध दंड आधारित राज्य व्यवस्था और नैतिक अनुशासन दोनों में से नैतिक अनुशासन का स्वीकार करते हैं । बुद्ध का यह आग्रह है कि प्रत्येक मानव नैतिक रूप से इतना शिक्षित होना चाहिए, जिससे वह न्यायिक शासन का रक्षक या संत्री बन सके ।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध का संदेश सामाजिक रूप से नितांत प्रासंगिक है क्योंकि बुद्ध का धम्म केवल अहिंसा और शांति की ही शिक्षा नहीं देता बल्कि उसमें न्याय, प्रेम, सद्गुण, समानता, बंधुत्व यह सभी मूल्यों का समावेश है । ध्यानार्ह है कि जिस 'धम्म' में उपरोक्त सभी मूल्यों का समावेशन हो वह 'धम्म' किसी भी रूप में अ-सामाजिक नहीं हो सकता ।

He was a sophisticated, long-sighted constitutional collaborator whose interests extended beyond caste to the very structure and psychology of Indian democracy. In a way, he was India's Tocqueville : not in aristocratic background, of course, but as a critic of the ancient regime, realistic enough to know that even a serious assault upon that regime (the introduction of democracy, the creation of a new legal order) would still leave alive the insidious limbs of past history, ready to nudge political action policy away from their intended goals. (Khilnani, 2016 : 471)

अ-सामाजिक धर्म वह है जिसमें अनैतिकता, शोषण, मानव अधिकारों का हनन होता है । इस संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि "अ-सामाजिक धर्म में 'स्वतंत्रता' का मूल्य सभी के लिए नहीं होता" अर्थात् स्वतंत्रता के सार्वत्रिक मूल्य के अभाव ही अ-सामाजिक धर्म की नींव है ।

स्वतंत्रता और समानता सभी मानवों का अधीकार होना चाहिए लेकिन सदियों से चली आ रही ऐसी अ-सामाजिक व्यवस्था का उपचार क्या है । असमानता और परतंत्रता से कैसे मुक्त हो सकें । डॉ. अम्बेडकर के अनुसार इसका उपाय सार्वत्रिक असरकारक भातृभाव है । भातृभाव का अर्थ है बंधुत्व और बंधुत्व का दूसरा नाम है - नीति । इसी संदर्भ में बुद्ध 'धम्म' को नीति मानते हैं क्योंकि यह नीति धम्म के समान ही पवित्र है ।

वर्तमान विश्व में 'धम्म' को नीति के रूप में देखना चाहिए । कथित विकास के फलस्वरुप आज विश्व प्रत्यक्ष गरीबी और पिछड़ेपन से त्रस्त है । गंभीर मानसिक और आध्यात्मिक समस्याएँ उस पर ही खड़ी हुई हैं । इस प्रकार मानवजाति की प्रगति का परिणाम यदि फांसीवाद हो, होलोकाष्ट हो या तो अकल्प्य यातनाएँ हो तो प्रश्न यह उठता है की क्या नया विश्व ऐसा है जिसमें केवल बर्बरता ही व्यक्त होती है ? खोखले आश्वासनों के इस Post Truth के युग में आर्थिक विकास की दुंदुभी बजती रहती है परंतु इसमें से जो कोमर्शियलाईजेशन और टेकनोलोजी का उद्भव हुआ है वह स्पष्ट रूप से इस जगत को नैतिक आधार नहीं दे सकता । ऐसी विकट वर्तमान परिस्थिति में डॉ. अम्बेडकर स्वयम को बौद्धधर्मी घोषित करते हैं । October - 1956 में डॉ. अम्बेडकर बौद्धधर्म अंगीकार करते हैं । (Guha, 2010 : 207)

बौद्धधर्म के स्वीकार की तात्त्विक भूमिका भी डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट की है । 'धर्म परिवर्तन' को महात्मा गांधीजी और डॉ. अम्बेडकर के संदर्भ में समझें तो गांधीजी की दलील है कि सभी धर्म मूलरुप से समान हैं इसलिए धर्मान्तरण की कोई आवश्यकता एवम् उपयुक्तता नहीं है । डॉ. अम्बेडकर की दलील है कि यदि सभी धर्म मूलरुप से समान हैं तो धर्मान्तरण में किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए । डॉ. अम्बेडकर महात्मा गांधीजी के इस विचार से सहमत हैं कि नीति के संदर्भ में सभी धर्म मूलरूप से एक हैं । मगर यही बात उनके लिए प्रश्नरुप है । तत्त्वतः भले ही सभी धर्म एक हों मगर उसकी कार्यान्विति में, उसके संस्थीकरण के रूप में अंतर है । उतना ही नहीं, धर्म के व्यावहारिक स्वरुप में विरोध अन्तर्निहित है । व्यवहार में धर्म अन्य के शोषण की केन्द्रीय व्यवस्था बन गया है जो न केवल व्यापक रुप से कार्यान्वित है बल्कि माइक्रोलेवल अलिखित शोषण व्यवहार भी है । धर्म का यह स्वरुप एक प्रकार के माईक्रोलेवल फासीज्म या फेनेटीसीझम में व्यक्त होता है । जिसका प्रत्युत्तर डॉ. अम्बेडकर को स्पष्टरुप से बौद्धधर्म में दिखाई देता है ।

महात्मा गांधीजी अस्पृश्यता को हिंदु धर्म का कलंक कहते हैं लेकिन इस कलंक का सुधार हिंदूधर्म के अंदर रहकर होना चाहिए, ऐसा भी मानते हैं । गांधीजी के मतानुसार धर्मान्तरण इसका विकल्प नहीं है । डॉ. अम्बेडकर इससे विपरीत अभिगम रखते है । उनके मतानुसार अस्पृश्यता हिंदू धर्म का ऐसा केन्सर है जिसका कोई उपचार हिंदू धर्म में रहकर संभव नहीं है । दोनों के दृष्टिबिंदुओं को हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते है । गांधीजी का अभिप्राय है कि बाथटब के गंदे पानी को फैंकने के साथ उसमें रहे बच्चे को फैंकना उचित नहीं है । डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिबिंदु से सोचें तो बाथटब का पानी तो मलिन है ही, मगर उसमें जो बच्चा है वह भी मृतप्राय है । इसलिए विवेक यह है कि मृत बच्चे

और बाथटब दोनों को फेंकना उचित है।

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्धधर्म का मात्र स्वीकार ही नहीं किया है लेकिन उन्होंने बौद्धधर्म को एक नए स्वरुप में प्रस्तुत भी किया है जिसे हम डॉ. अम्बेडकर का **'नवयान बुद्धिजम'** कह सकते हैं। बौद्धधर्म में उनके प्रवेश को डॉ. अम्बेडकर ने पुनर्जन्म के रूप में देखा और बुद्ध के संदेश के अनुसार जीवन जीने की प्रतिज्ञा ली; साथ ही साथ, हजारों दलित-पिछड़े लोगों को यह प्रतिज्ञा दिलाई।

इसमें हिन्दूधर्म की ब्राह्मणवादी व्यवस्था का अस्वीकार करके बौद्ध उपदेश का स्वीकार है। तात्त्विक रूप से देखें तो डॉ. अम्बेडकर वर्णव्यवस्था के हिंदूवादी बृहद्वृत्तांत का अस्वीकार करके हिंदूधर्म में स्थित आंतरविरोधों और इसकी उच्चावच्च प्रक्रिया का इन्कार करते हैं। इसके बदले में बौद्धधर्म के लघुवृत्तांत को **'नवयान'** के रूप में प्रस्थापित करते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दूधर्म की वास्तविक छवि का स्वानुभव किया था। इस छवि में हिन्दूवादी राजकीय व्यवस्थाओं की सत्ता का स्वीकार, और इसके औचित्य का स्वीकार और इसके गुणानुवाद का स्वीकार था। डॉ. अम्बेडकर का यह स्वानुभव था कि इस प्रकार के वैचारिक और व्यवहारिक स्वीकृत पेरेडाईम में अन्य रूप से सोचने की या कार्य करने की आजादी नहीं देता। इतना ही नहीं, नये विचारों और नये कार्यों को सत्ता द्वारा कुचल दिया जाता है या मौन बना दिया जाता है। सत्ता द्वारा थोपा गया यह विचारमौन व्यक्ति, धर्म और समाज के लिए भयरूप है क्योंकि इसका मुख्य आधार वैचारिक नपुंसकता में और कार्यशून्यता में स्थित है। ऐसी स्थिति में डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में **'नवयान बुद्धिजम'** एक वैकल्पिक विचार और व्यवहार की प्रशस्य अभिव्यक्ति है। (Omvedt, 2003 : 243) इस तरह डॉ. अम्बेडकर का नवयान बुद्धिजम हिंदूधर्म के पुनर्विचार का साहसिक प्रयास है। हिन्दूधर्म को स्वयम् के आदर्शों और व्यवहार के समीकरणों में सुसंगतता लाना आवश्यक है ऐसा स्पष्ट बोध 'नवयान' द्वारा हमें प्राप्त होता है। इस तरह...

(१) हिंदूधर्म के विचार और आचार की असंगति का स्वानुभव।

(२) हिंदूधर्म की बृहदवृत्तांत की असंगति के समाधान के लिए लघुवृत्तांत के रुप में नवयान बुद्धिजम की अभिव्यक्ति।

(३) बौद्धधर्म में स्थित समानतावादी विचारणा और इसको व्यवहार में चरितार्थ करने की कार्यपद्धति जिसको हम 'शीलनिर्माण' भी कह सकते हैं।

महात्मा बुद्ध के दो वाक्य (१) प्रज्ञा का अनुसरण करुणा के द्वारा ही होना चाहिए, और (२) जहाँ तक जगत में एक भी व्यक्ति दु:खी है तब तक मैं मोक्ष के परमपद की इच्छा नहीं रखूंगा। - इन दो वाक्यों में रही समानता और करुणा डॉ. अम्बेडकर के मतानुसार व्यक्तिमात्र के प्रति सच्ची निष्ठा की द्योतक है। इस समानता और करुणा ने डॉ. अम्बेडकर को बौद्धधर्म के परीशीलनरूप परिपालन के लिए आश्वस्त किया।

REFERENCES

- Guha Ramchandra (edt.) (2010), *Makers of Modern India*, New Delhi : Penguin Books.
- Khilnani Sunil (2016), *Incarnations – India in 50 lives*, Penguin Books, I eds.
- Omvedt Gail (2003), *Buddhism in India – Challenging Brahmanism and Caste*, New Delhi : SAGE Publication.
- Rodrigues Valerian (2002), *The Essential of B.R. Ambedkar*, Oxford Publication.